# नियाज़ नामा

## हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़

मौलाना सिराजुल क़ादरी बहराइची

ग़ाज़ी किताब घर

गंगवल बाज़ार बहराइच (युपी)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

# नियाज़ नामा

## इमाम जअ़फ़र सादिक़

मौलाना सिराजुल क़ादिरी, बहराइची

—:नाशिरः—

गा़ज़ी किताब घर गंगवल बाज़ार

ज़िला बहराइच शरीफ़, यू.पी. (इंडिया)

नाम किताब : नियाज़ नामाइमाम जअ़फर सादिक़
लेखक : मौलाना सिराजुल-क़ादिरी बहराइची
सने इशाअत अव्वल : २०१० ई./१४३१ हि.
सने इशाअत बारेसोम : २०१४ ई./१४३५ हि.
Publisher : **Ghazi Kitab Ghar**
Gangwal Bazar, Bahraich, U.P.
Mob.: 9870742304

**मिलने के पतेः-**

- ☆ मकतबा तय्यबह, इस्माईल हबीब मस्जिद, मुम्बई
- ☆ न्यू सिलवर बुक एजंसी, मोहम्मद अली रोड, मुम्बई
- ☆ नाज़ बुक डीपो, मोहम्मद अली रोड, मुम्बई
- ☆ इक़रा बुक डीपो, मोहम्मद अली रोड, मुम्बई
- ☆ बुक सिटी, मोहम्मद अली रोड, मुम्बई
- ☆ उसमानियह बुक डीपो, मोहम्मद अली रोड, मुम्बई
- ☆ कुतुबख़ाना अमजदिय्या, देहली
- ☆ मकतबा इमामे आज़म, देहली
- ☆ ख़्वाजा बुक डीपो, देहली
- ☆ ताजुश्शरीअह किताब घर, औरंगाबाद
- ☆ शरीफ़ी किताब घर, चेंबूर
- ☆ क़ादरी बुक डीपो, सुलतान मारकीट, नानपारह, बहराइच, यू.पी.
- ☆ गाज़ी बुक डीपो, दरगाह रोड, बहराइच शरीफ़, यू. पी.
- ☆ जामिअह वज़ीरूल उलूम गंगवल बाज़ार,ज़िला बहराइच यू. पी.
- ☆ मकतबा अल-हबीबियह, बग्घी रोड, गोन्डा
- ☆ मकतबा अल-मुसतफ़ा, बरेली शरीफ़, यू.पी.
- ☆ हाफ़िज़े मिल्लत किताब घर, बलराम पुर, यू.पी.
- ☆ शुकूर सालार बुक सेलर, बलराम पुर, यू.पी.

# नक़्शे अव्वल

एक मुद्दत से यह ख़्वाहिश थी कि हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की मुख़्तसर सवानेह और २२ रजब के फ़ातिहा के तअल्लुक़ से कुछ लिखूँ मगर जिस वक़्त ख़्वाहिश की तकमील का इरादह हुआ उसी वक़्त अपने अहबाब की साज़िशों का शिकार हो गया जिस की वजह से ज़हन इस क़दर मुन्तशिर हुआ कि किसी काम के लिए ज़ेहनी तौर पर तय्यार न हो सका लेकिन इसी अय्याम में शवाहिदु न्नुबूव्वह मुसन्निफ़ हज़रत अल्लामा अब्दुर रहमान जामी के हवाले से फ़ज़ाइले अलहे बैत व सवानेह बारह इमाम जो मुफ़्ती मोहम्मद अशरफ़ रज़ा क़ादरी मद्दज़िल्लुहुन्नूरानी क़ाज़िए इदार ए शरईयह महाराष्ट्र की तरतीब व तख़रीज है , हाथ आगयी जिस से भर पूर इस्तिफ़ादह किया और मिन व अन वाक़िआत को नक़्ल करके किताबचह की शक्ल में पेश कर दिया

अहले तशीअ २२ रजबुल मुरज्जब की तारीख़ को हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ मन्सूब करके कूँडे का नियाज़ मुबालिग़ह के साथ दिलाते और मनाते हैं और इसी तरीक़े को अहले सुन्नत व जमाअत के अकसर हज़रात अपनाये हुए हैं। इस फ़ातिहा के एहतमाम में खीर, पूरी और मीठी टिकिया बनाये जाते हैं और कूँडे में भर कर नियाज़ दिलाते हैं, नियाज़ के बाद हर शख़्श के लिए लाज़मी क़रार देते हैं कि वहीं बैठ कर खाये और बग़ैर ग़ुस्ल के कोई नहीं खा सकता।, यही वह बातैं हैं जो शीअह हज़रात से मुशाबिहत रखती हैं, अहले सुन्नत व जमातअत एक नाजी फ़िरक़ह है जिस के पास दस्तूर है और मीलाद ख़्वानी, नियाज़ और फ़ातिहा के उसूल मौजूद हैं हमैं किसी फ़िरक़े की मुशाबिहत की कोई ज़रुरत नहीं, लिहाज़ा सुन्नी जन्नती

मुसलमानो ! नियाज़ फ़ातिहा, तीजह, बरसी, चिहलुम यह हमारा हक़ है और उसके फ़वाइद भी बे शुमार हैं और हम न करेंगे तो कौन करेगा, लेकिन जैसा हुक्मे शरयी है वैसा ही करना चाहिये, आम फ़ातिहा की तरह कूँडे का भी फ़ातिहा करो और ख़्यालाते फ़ासिदह से तौबह करो, हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का विसाल १५ रजबुल मुरज्जब को हुआ है इस मुनासिबत से फ़ातिहा की अस्ल तारीख़ १५ रजब है न कि २२ वैसे किसी भी तारीख़ में फ़ातिहा ख़्वानी हो सकती है हाँ अगर तारीख़े विसाल ही पर करनी है तो जो तारीख़ें हमारी मुस्तनद हैं उन्हीं में होनी चाहिए ।

अल्लाह तआला हम सबको वाहियात और खुराफ़ात से महफ़ूज़ रख्खे और अपने सच्चे महबूब बन्दों की मोहब्बत हमारे दिलों में अता फ़रमाये । (आमीन)

गदाए कूचए मसऊदे ग़ाज़ी सिराजुल क़ादरी बहराइची
बानी व नाज़िमें आला साबरी यतीम ख़ानह, जामिआ सरकारे आला हज़रत
गंगवल बाज़ार, ज़िला बहराइच शरीफ़ यूपी (इंडिया)
२४ जमादिल ऊला १४३१ हिजरी / ९ मई २०१० ई.

# २२ नहीं १५

तहक़ीक़ी और मुस्तनद रिवायात से साबित है कि हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की तारीख़े विसाल १५ रजब है लिहाज़ा मुसलमानों २२ को छोड़ो १५ को अपनाओ ताकी इमाम साहिब की रुह आप की तरफ़ मुतवज्जह हो और उनके फ़ैज़े बेकराँ से भर पूर फ़ाइदह उठाया जाये ।

**नोट** : फ़ातिहा ख़्वानी चाहे सुबह करें या शाम को सवाब व फ़ज़ीलत में कोई कमी वाक़ेअ न होगी ।

# नाम व नसब

हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हिदायत के बारह इमामों में से छटे इमाम हैं वालिद साहिब का नाम मोहम्मद बाक़िर बिन ज़ैनुल आबदीन बिन इमाम हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुम है, आपकी कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह है और बअज़ लोगों ने अबू इस्माईल लिखा है आप का मशहूर लक़ब सादिक़ है

# वालिदह की तरफ़ से

हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की वालिदह का नाम उम्मे फ़रदह बिन्ते क़ासिम बिन अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हुम है उम्मे फ़रदह की वालिदह हज़रत अस्मा बिन्ते अब्दुर रहमान बिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं इसी लिए इमाम जअफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने इरशाद फ़रमाया मुझे अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने दोबारह जन्म दिया

# विलादत बा सआदत

आप मदीनह मुनव्वरह में ८३ हिजरी बरोज़े पीर माहे रबीउल अव्वल के आख़िरी अशरह में पैदा हुए ।

# विसाले मुबारकह

आप का विसाले मुबारकह बरोज़ पीर १५ रजबुल मुरज्जब १४८ हिजरी को हुआ आपकी क़ब्रे मुबारक जन्नतुल बक़ीअ शरीफ़ में है । ( सवानेह बारह इमाम स. १२५/१२६)

# इमाम जअफ़र और मंसूर ख़लीफ़ह

ख़लीफ़ह मंसूर अब्बासी के बारे में रिवायत है कि किसी बात पर नाराज़ हो कर उसने अपने सिपाहियों को हज़रत इमाम

जअफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की तलाश में भेजा । नाराज़गी ज़्यादह थी क़त्ल की धमकी दे चुका था । हज़रत इमाम जब तशरीफ़ लाये तो उसने तहदीद आमेज़ बातें कीं, और कहा ।

अहले इराक़ ने आप को अपना अमीर बनाया है और अपनी ज़कात आप को देते हैं और आप मेरी ख़िलाफ़त से बग़ावत करके फ़साद बरपा करना चाहते हैं। ख़ुदा मुझे क़त्ल करे अगर मैं आप को क़त्ल न करूँ ।

इमाम मोहतरम नें निहायत मतानत से जवाबन इरशाद फ़रमाया। अमीरुल मोमिनीन ! हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को सलतनत व हुकूमत अता की गयी तो उन्होंने रब तआला का शुक्र अदा फ़रमाया। हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम दुनियावी मुसीबत में मुब्तिला हुए तो उन्होंने सब्र फ़रमाया और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर ज़ुल्म व ज़्यादती हुई तो उन्होंने अफ़्व दर गुज़र से काम लिया।

हज़रत के इस कलाम को सुन कर मंसूर का ग़ुस्सह ख़त्म हो गया, तकलीफ़ का ख़्याल तर्क कर दिया, और वह ख़ुश होकर आप की तारीफ़ करने लगा, वहाँ से वापसी पर किसी ने दरयाफ़्त किया हुज़ूर ! आप नें मंसूर के पास जाने से क़ब्ल कुछ दुआ फ़रमायी थी, वह दुआ क्या थी ? इरशाद फ़रमाया वह दुआ यह थी। **तर्जुमह मुलाहिज़ह कीजिए :**

आप ने वालिदे गिरामी से रिवायत किया , कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है ।

अल्लाह तआला जिसे कोई निअमत अता फ़रमाये, उस पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना ज़रुरी है, और जिसे रोज़ी की तंगी हो उसे चाहिए कि अस्तग़फार पढ़े, और जो किसी काम की वजह से रंजीदह व फ़िकर मंद हो उसे चाहिए कि **लाहौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीइल अज़ीम** का विर्द करे।

अहले निअमत को शुक्र लाज़िम है
तंगदस्तो ! पढ़ो तुम अस्तग़फ़ार
हम्मो ग़म का इलाज है लाहौल
है यह इरशादे सय्यदे अबरार

(बज़मे अवलिया अज़ बदरूल क़ादरी)

## दरबान का अन्धा हो जाना

एक रोज़ का ज़िक्र है कि ख़लीफ़ह मंसूर ने अपने दरबान को हिदायत दी कि हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को मेरे यहाँ पहुँचने से पहले ही मौत के घाट उतार देना। उसी रोज़ हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाये और मंसूर के यहाँ आकर बैठ गये, मंसूर ने दरबान को बुलाया, दरबान ने देखा कि इमाम साहिब तशरीफ़ रखते हैं। जब आप वापस तशरीफ़ ले गये तो मंसूर ने दरबान को वापस बुला कर कहा : मैंने तुम्हें इमाम साहिब के बारे में क्या हुक्म दिया था ?

दरबान ने कहा : ऐ ख़लीफ़ह ! क़सम ब ख़ुदा ! मैंने इमाम साहिब को आप के पास आते देखा ही नहीं , बस यही देखा कि आप के पास तशरीफ़ रखते हैं।

## ख़लीफ़ह मंसूर का इमाम जअफ़र सादिक़ को बुलाना

एक दफ़अ का ज़िक्र है कि मंसूर के एक दरबारी ने बयान किया कि : मैंने देखा कि मंसूर निहायत ग़मज़दह हैं और कहा : ऐ ख़लीफ़ह ! आप इस क़दर परेशान क्यों हैं , ख़लीफ़ह ने कहा : मैंने अलवियों की एक जमाअत को हलाक करवाया है लेकिन उसके सरदार को छोड़ दिया है, उस शख़्स ने कहा वह कौन है ? ख़लीफ़ह ने कहा वह जअफ़र बिन मोहम्मद है, उस शख़्स ने कहा : वह तो ऐसा शख़्स है जो अपने मअबूद के आगे सर ब

सुजूद रहता है, वह दुनिया का कोई लालच नहीं रखता, ख़लीफ़ह ने कहा : मैं जानता हूँ कि तुम्हें उन से अक़ीदत है हालांकि पूरा मुल्क उन का मुख़ालिफ़ है, मैंने क़सम खा रख्खी है कि जब तक उन्हें हलाक न कर दूँ चैन से ना बैठूँगा। फिर ख़लीफ़ह ने जल्लाद को हुक्म दिया कि जब जअफ़र बिन मोहम्मद आयें तो मैं अपना हाथ अपने सर पर सख लूंगा तो तुम उन्हें क़त्ल कर देना।

ख़लीफ़ह ने इमाम जअफ़र को बुलवाया, मैं आप के हमराह था, मैंने देखा कि आप अपने मुंह में कुछ पढ़ रहे हैं जिस का मुझे इल्म न हो सका लेकिन मैंने यह कुछ देखा कि आप के महेल्लात में दाख़िल होते ही ज़लज़लह सा आगया और ख़लीफ़ह ऐसे बाहेर आया जैसे कश्ती समन्दर की लहरों से ख़लासी करके बाहेर आती है, ख़लीफ़ह नंगे पांव आप के इस्तक़बाल के लिए आया और ख़ड़े होकर आप को अपनी जाए नशिश्त पर बिठाया और कहने लगा : ऐ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बेटे ! आप किस काम से तशरीफ़ लाये हैं ?

हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : तुम्हारे बुलाने पर मैं आया हूँ, फिर ख़लीफ़ह ने कहा किसी चीज़ की तलब हो तो इरशाद फ़रमायें , हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ ने फ़रमाया : मुझे किसी चीज़ की तलब नहीं बेहतर यह है कि तुम मुझे बेज़ा बुलाया न करो , जब मैं चाहूँगा खुद ही आजाऊँगा, आप उठ कर बाहेर तशरीफ़ ले आये तो मंसूर पर उसी वक़्त बेहोशी तारी हो गयी और रात गये तक बेहोश रहा यहां तक कि नमाज़ भी क़ज़ा हो गयी,

जब बेहोशी से ख़लासी पायी तो नमाज़ अदा करके मुझे तलब किया और कहा कि : जब मैंने इमामे पाक को बुलवाया था तो मैंने एक अज़दहा देखा जिस के मुँह का एक हिस्सह ज़मीन पर था और दूसरा हिस्सह महेल के ऊपर मुझे साफ़ तौर पर कह रहा था कि मैं अल्लाह तआला की जानिब से आया हूँ अगर तुम ने इमाम पाक को किसी क़िस्म की तकलीफ़ दी तो तुझे और तेरे

महेल्लात को नीस्त व नाबूद कर दूँगा।

यह सुन कर मेरी तबीअत क़ाबू से बाहेर हो गयी जो तुम्हारी नज़र से दूर नहीं है, उसने कहा यह तो न जादू है और न ही किसी क़िस्म का सिहर यह तो इस्मे आज़म की ख़ूबी है जो ख़्वाज ए कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि वआला आलिही वसल्लम पर नाज़िल हुआ था, फिर जिस तरह आप ने चाहा वैसा ही हुआ।

# हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ की इल्मी फ़रास्त

एक दफ़अ हज़रत अबू बुसेर रहमतुल्लाहि अलैहि ने बयान किया कि मैं मदीनह मुनव्वरह गया तो मेरे हमराह एक कनीज़ थी, मैंने उस कनीज़ से मुवाशिरत की और फिर गुस्ल के लिए बाहेर निकला तो मैंने देखा कि बहुत से लोग हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ की मुलाक़ात के लिए उनके आसतान ए आलिया पर हाज़िर हो रहे हैं, हुसूले बरकत के लिए हाज़िर हो गया तो आप की नज़र मुझ पर पड़ी, आप ने मुझ से फ़रमाया : ऐ अबू बुसेर! शायद कि तुम्हें इस बात का इल्म नहीं कि अंम्बिया ए किराम और उनकी औलाद की रिहाइश गाहों पर आलमे जनाबत (नापाकी की हालत) में नहीं जाना चाहिए।

अबू बुसेर ने कहा : ऐ इब्ने रसूलुल्लाह ( सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मैंने बकसतर आदमियों को आप के पास आते देखा तो मुझे अन्देशह हुआ कि शायद आप की मुलाक़ात की दौलत फिर हाथ न आये इस लिए मैं भी इन तमाम के हमराह आगया। यह कह कर मैं ताइब हुआ कि आइन्दह कभी भी ऐसा नहीं करुँगा और बाहर लौट आया।

# क़ैद से निजात दिलवाना

एक शख़्श ने बयान किया कि मेरा एक दोस्त था जिसे मंसूर ने क़ैद में डाल दिया, मेरी मुलाक़ात हज़रत इमाम जअफ़र

सादिक़ से दौराने हज अरफ़ात के मैदान में हुई, आप ने मुझ से मेरे दोस्त के बारे में दरयाफ़्त किया मैंने अर्ज़ किया : हुज़ूर उसे तो मंसूर ने क़ैद में डाल रख्खा है ।

आप ने उस क़ैदी के लिए बारगाहे इलाही में दुआ की और कुछ वक़्त के बाद फ़रमाया, क़सम बख़ुदा तुम्हारा दोस्त क़ैद से निजात हासिल कर चुका है ।

रावी ने बयान किया कि जब हज से फ़ारिग़ हो कर वापस आया तो मैंने अपने दोस्त से दरयाफ़्त किया कि : तुम्हें क़ैद से रिहायी किस दिन मिली थी ? उसने कहा : मुझे अरफ़ह के रोज़ अस्र की नमाज़ के बाद रिहायी मिल गयी थी ।

# गुम शुदह चादर मिल गयी

एक दफ़अ का ज़िक्र है कि एक शख़्स ने बयान किया कि मैंने मक्कह मोअज़्ज़मह में एक चादर ख़रीदी और इरादह किया यह चादर हरगिज़ किसी को न दूँगा बल्की मैं अपने इन्तिक़ाल के बाद इस का कफ़न बनाऊँगा, जब मैं अरफ़ात से मुज़दल्फ़ह में वापस आया तो चादर गुम हो गयी, मुझे इस चादर का बड़ा दुख हुआ, फिर मैं सुबह सवेरे मुज़दल्फ़ह से मिना की तरफ़ आया तो मस्जिदे ख़ीफ़ में बैठ गया, अचानक एक आदमी जो हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आय था आकर कहने लगा कि तुम्हे इमाम साहिब बुला रहे हैं, मैं बहुत जल्दी आप की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और सलाम अर्ज़ करके एक तरफ़ बैठ गया, आप ने मेरी जानिब नज़्रे अमीक़ ( गहरी नज़र) से देख कर फ़रमाया : क्या तुम यह पसन्द करते हो कि तुम्हें तुम्हारी चादर मिल जाये जो तुम्हें तुम्हारी मौत के बाद कफ़न का काम दे, उसने अर्ज़ किया :ऐ इब्ने रसूलुल्लाह ! ( सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मिल जाये तो बहुत बेहतर है वह काफ़ी दिनों से गुम हो चुकी है।

आपने अपने ग़ुलाम को आवाज़ दी, वह चादर ले आया मैंने देखा वही थी, आप ने फ़रमाया : इसे लेलो और रब का शुक्र अदा करो।

# मुरदह गाय को ज़िन्दह करना

एक दफ़अ का ज़िक्र है कि एक शख़्स ने बयान किया कि एक रोज़ मैं मक्कह मोअज़्ज़मह में हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के हमराह जा रहा था कि हम एक जगह से गुज़रे जहाँ पर एक औरत मुरदह गाय पर आहो ज़ारी कर रही थी, हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ ने फ़रमाया : आया तुम्हारा ख़्याल है कि अल्लाह तआला मुरदह गाय को ज़िन्दह कर देगा।

औरत बोली : आप हम से इस तरह मज़ाक़ क्यों करते हैं मैं तो पहले ही से मुसीबत में मुब्तिला हूँ, हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ ने औरत से फ़रमाया : मैं तुम से मज़ाक़ नहीं करता ।

उस के बाद हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने गाय के लिए दुआ फ़रमायी गाय का सर और पाँव पकड़ कर हिलाया वह गाय जल्दी से उठ खड़ी हुई फिर इमाम साहिब लोगों में चले गये और वह औरत आप की पहचान न कर सकी।

# खुजूर के दरख़्त का झुक जाना

एक दफ़अ का ज़िक्र है कि एक शख़्स ने बयान किया कि हम हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के हमराह हज के लिए जा रहे थे कि रास्तह में हमें एक जगह सूखे हुए दरख़्तों के पास ठहेरना पड़ा, आप ने अन्दर ही अन्दर कुछ पढ़ना शुरू कर दिया जो मैं हरगिज़ समझ न सका, फिर अचानक आपने उन सूखे दरख़्तों की तरफ़ मुँह करके फ़रमाया। अल्लाह तआला ने तुम में जो हमारे लिए रिज़्क़ पैदा किया है उस में से हमें भी खिलाओ, उसी दरमियान में देखा कि वह जंगली खुजूरें आप की तरफ़ झुक रही थीं जिन पर तर ख़ूशे लटक रहे थे, आप ने मुझ से फ़रमाया : मेरे क़रीब आओ बिस्मिल्लाह पढ़ कर खाओ, मैंने आप के हुक्म की तकमील करते हुए खुजूरें खायीं ।

ऐसी मज़ेदार ख़ुजूरें इस से क़ब्ल कभी हमने न खायी थीं ,

वहाँ एक एराबी भी मौजूद था उसने कहा कि आज जैसा जादू मैंने कभी नहीं देखा, हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : हम अंम्बिया के वारिस होते हैं हम साहिर व काहिन नहीं होते हम बारगाहे ख़ुदा वन्दी में दुआ करते हैं और वह क़ुबूल फ़रमाता है अगर तुम चाहो तो हमारी दुआ से तुम्हारी शक्ल तबदील हो जाये और तुम्हारी शक्ल कुत्ते की शक्ल बन जाये।

एराबी ने अपनी जिहालत का सुबूत पेश करते हुए कहा : हाँ ! आप दुआ कीजिए, आप ने दुआ की तो एराबी कुत्ता बन कर अपने घर की तरफ़ भाग गया।

हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ ने फ़रमाया इसका तअक़्क़ुब (पीछाा) कीजिए। मैं उसके पीछे गया तो देखा कि यही कुत्ता अपने घर में जाकर अपने बाल बच्चों और घर वालों के सामने दुम हिलाने लगा , घर वालों ने उसे असा मार करे दौड़ा दिया, मैंने वापस आकर तमाम हाल अर्ज़ कर दिया , इतने में वह भी आगया और आप के सामने ज़मीन पर लोटने लगा, उसकी आँखों से पानी बहने लगा, यह हालत देख कर आप ने फिर दुआ फ़रमायी तो वह इन्सान बन गया।

उस के बाद फ़रमाया : ऐ एराबी मैंने जो कुछ कहा था उस पर यक़ीन है या नहीं, एराबी ने कहा : हाँ हुज़ूर एक बार तो कुजा बल्की हज़ार बार ईमान रखता हूँ।

## परिन्दों को ज़िन्दह करना

एक दफ़अ का ज़िक्र है कि एक शख़्स ने बयान किया कि एक रोज़ ज़्यादह लोगों के हमराह हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर था तो आपने फ़रमाया :

जब अल्लाह जल्ला मजदहुल करीम ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम को परिन्दों में से चार परिन्दे पकड़िये और फिर उन्हें अपनी तरफ़ बुलाइये, का हुक्म फ़रमाया था तो क्या वह परिन्दे हम जिन्स थे या मुख़्तलिफ़ जिन्स ? अगर तुम तलब करो तो तुम्हें वैसा ही करके दिखा दें, हमने कहा : हाँ , आपने

फ़रमाया : ऐ मोर इधर आजाओ, उसी वक़्त मोर हाज़िर होगया, फिर फ़रमाया ऐ कौए इधर आओ, फ़ौरन एक कौआ हाज़िर होगया, फिर फ़रमाया : ऐ बाज़ इधर आओ : फ़ौरन एक बाज़ हाज़िर होगया, फिर फ़रमाया : कबूतर इधर आओ, फ़ौरन एक कबूतर हाज़िर हो गया।

जब चारों परिन्दे आगये तो आप ने फ़रमाया इन्हें ज़वह करके इनके टुकड़े टुकड़े करदो और एक का गोश्त दूसरे से मिला दो लेकिन हर एक के सर की हिफ़ाज़त करना , फिर आपने मोर के सर को पकड़ कर फ़रमाया :ऐ मोर !हमने मुशाहिदह किया कि मोर की हडडियाँ मोर के पर और मोर का गोश्त उसके सर के साथ मिल गये और वह एक सहीह सालिम मोर बन गया, इसी तरह दूसरे तीनों परिन्दों से वास्तह पड़ा तो वह भी ज़िन्दह हो गये।

# बहिश्त में सराय ख़रीदना

एक दफ़अ का ज़िक्र है कि एक शख़्स हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में दस हज़ार दीनार लेकर हाज़िर हुआ और कहा :

हुज़ूर मैं हज करने के लिए जा रहा हूँ आप मेरे इस पैसे से कोई सराय ख़रीद लेना ताकी मैं हज से वापसी पर अपनी औलाद को लेकर रहना शुरु कर दूँ । हज से वापसी पर वह शख़्स आप की बारगाह में हाज़िर हुआ तो आप ने उस से फ़रमाया :

मैंने तुम्हारे लिए बहिश्त में सराय ख़रीद ली है जिस की पहली हद हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर, दूसरी हद हज़रत अलीए मुरतज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु पर, तीसरी हद हज़रत हसने मुजतबा रज़ियल्लाहु अन्हु पर और चौथी हद हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर ख़त्म होती है और मैंने यह परवानह तहरीर कर दिया है ।

वह शख़्स यह बात सुन कर बहुत ख़ुश हुआ और यह

परवानह लेकर अपने घर चला गया और घर जाते ही बीमार हो गया और वसिय्यत की कि इस परवाने को मेरे विसाल के बाद मेरी क़ब्र में रख देना , घर वालों ने दफ़्न करते वक़्त उस परवाने को क़ब्र में रख दिया, फिर दूसरे दिन देखा कि वही परवानह क़ब्र पर पड़ा हुआ था और उसके पीछे यह तहरीर था कि : हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ ने जो वअदह किया था वह पूरा हो गया।

## पचास हज के लिए दुआ करना

एक दफ़अ का ज़िक्र है कि एक आदमी ने हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से दुआ के लिए अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला मुझे बकस्तर माल दे ताकी मैं बहुत से हज करुँ, आप ने दुआ की : ऐ इलाहल आलमीन ! इन्हें बकस्रत माल अता कर ताकी यह अपनी ज़िन्दगी में पचास हज करे, चुनाँचेह उसे इतना माल हाथ आया कि उसने पूरे पचास हज किये। लेकिन इक्कानवाँ हज के लिए मक़ामे जोहफ़ाह पर पहुँचा तो ग़ुस्ल करने की ख़्वाहिश की, जूहीं पानी को हाथ लगाया तो पानी की तेज़ मौजें बहा ले गयीं और वह उसी में डूब गया।

## अब्बास कलबी को शेर का फाड़ना

जब हज़रते ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद करके सूली पर चढ़ाया गया तो हाकिमे अब्बासी ने यह दो शेअर पढ़े

**तर्जुमह** : हम ने ज़ैद को खुजूर के तने पर फांसी देदी और मैंने कभी हिदायत याफ़्तह शख़्स को तख़्तए दार पर लटकते नहीं देखा, तुम ने हिमाक़त के सबब से हज़रत अली को , हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हुमा से बढ़ा दिया हालाँकी हज़रते उस्मान, अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा से ज़्यादह पाक और बेहतर थे।

जब यह दो शेअर आप के कान में डाले गये तो आप ने उस के हक़ में बद दुआ करते हुए कहा : **तर्जुमह** । ऐ अल्लाह ! अगर तेरा बन्दह वाक़यी झूटा है तो तू उस पर अपना कुत्ता

मुसल्लत करदे, फिर उसे वनी उमय्यह ने कूफ़ा भेज दिया लेकिन उसे रास्ते में शेर ने फाड़ दिया जव यह ख़बर आप को पहुँची तो आप ने सर सजदह में रख कर कहा : **अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अन्जज़्ना मा वअदना** तमाम तअरीफ़ें उस रब के लिए है जिस ने हम से जो वअदह किया उसे पूरा किया,

(**माख़ूज़** : फ़ज़ाइले अहले बैत व सवानेह बारह इमाम, बज़्मे अवलिया)

# तरीक़ ए फ़ातिहा

| | |
|---|---|
| दुरुद शरीफ़ | एक बार |
| क़ुलया अय्युहल काफ़िरून | एक बार |
| क़ुलहुवल्लाहु अहद | तीन बार |
| क़ुल अऊज़ो विरब्बिल फ़लक़ | एक बार |
| क़ुल अऊज़ो विरब्बिन्नास | एक बार |
| अल्हमदो शरीफ़ | एक बार |
| अलिफ़ लाम मीम मुफ़लिहून तक | एक बार |
| वइलाहुकुम (अगर याद हो) | एक बार |

**पढ़ कर इस तरह दुआ करें ।**

या अल्लाह या रहमान या रहीम जो कुछ क़ुरआन अज़ीम की तिलावत की गयी दुरूद शरीफ़ वग़ैरह पढ़ा गया और जो कुछ शीरीनी नियाज़ वग़ैरह मौजूद है इस सबका सहीह सहीह तिलावत और तय्यब व ताहिर नियाज़ का सवाब आक़ा ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाहे नाज़ में पेश करतें हैं तूअपने फ़ज़्ल व करम से क़ुबूल फ़रमा बादहू जुमला अम्बिया अलैहिमुस्सलाम , सहाब ए किराम , ताबईन , तबअे ताबईन तेरी बारगाह के सारे मक़बूल बन्दों और बन्दियों की अरवाहे पाक को इस का सवाव पेश करते हैं क़ुबूलियत अता फ़रमा मख़्सूस तौर पर तेरे महवूब जनाबे मुहम्मदुर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

के सदक़े हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की रूह को सवाब अता फ़रमा और आप के जुमलह अहले ख़ाना और मुहिब्बीन और मुतवस्सिलीन की अरवाह को इस का सवाब अता फ़रमा,

या अल्लाह अपने उन तमाम महबूब बन्दों के सदक़े में बिल ख़ुसूस हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के वसीले से हम सब की ख़ताओं को मआफ़ फ़रमा, ज़ालिमों के ज़ुल्म से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा, शैतान के मक्र व फ़रेब से महफ़ूज़ फ़रमा, हमें अपने माँ बाप की ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा , और जिन जिन के वालिदैन इन्तिक़ाल कर चुके हैं उनकी मग़फ़िरत फ़रमा, या अल्लाह हमारी क़ौम की औरतों को इसलामी मुआशिरह इसलामी माहौल में ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा ,नमाज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा, बीमारों को शिफ़ा अता फ़रमा, बे औलाद माँ बहनों को नेक सॉलेह फ़रज़न्द अता फ़रमा, इलाही हम सब को सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमा , या अल्लाह हम सब के जान व माल, इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त फ़रमा , हमारी दुआओं को क़ुबूल फ़रमा, हम सब का ख़ातिमह ईमान पर नसीब फ़रमा या अल्लाह जाइज़ तमन्नायें पूरी फ़रमा, तमाम आफ़ात व मुसीबत से महफ़ूज़ फ़रमा , हम सब के घर में ख़ैरो बरकत नाज़िल फ़रमा।

**वसल्लल्लाहु तआला अला हबीबिहिल करीम वअला आलिही व असहाबिही अजमईन बिरहमतिका या अरहमर्राहिमीन।**

# ग़ाज़ी किताब घर की मतबूआत

इस्लामी हीरे यानी सुन्नी कुइज़
गुसताख़ कलम
अनवारे कुरआनी
मुजरिम अदालत में
शबे बरात
तोहफ़ए रमज़ान
बरके रज़वियत, बर फ़ितनए वहाबियत
बरके वहदत बर फ़ितनए नजदियत
अंधे नजदी देख ले
मुनाफ़िक़ीन
बहिशती ज़ेवर पर रज़वी ऐटम बम
उलमाये दिवबंद की कहानी
तोहफ़ए निकाह
दशते करबला
शहीदाने करबला
असली दस बीबीयों की कहानी
असली सय्यदह बीबी की कहानी
माँ का आँचल
क़ब्र से जन्नत तक
लुआबे दहने मुस्तफ़ा स०
असहाबे कहफ़
मक़ामे आला हज़रत
तारीख़ी कहानियाँ
फ़ज़ाइले मजमूअए नमाज़
फ़ातिहा इमाम जअफ़र सादिक़
फ़ातिहा का सहीह तरीक़ह
चेहल हदीस
नूरे यज़दाँ (बेकल उत्तसाही, बलराम पुरी)
इरफ़ाने मुस्तफ़ा (पाकेट)
नग़माते मुस्तफ़ा (पाकेट)
अनवारे मुस्तफ़ा (पाकेट)
जलवये मुस्तफ़ा (पाकेट)
मनक़बतें (पाकेट)
क़ादरी रज़वी मजमूअये सलाम
ग़ाज़ी क़ाइदह
ग़ाज़ी क़ाइदह मुकम्मल
आप का मदरसा अव्वल
आप का मदरसा दोम
आप का मदरसा सोम
बहारे रहमत क़ाइदह
बहारे रहमत अव्वल
बहारे रहमत दोम
बहारे रहमत सोम
सुन्नी कुइज़ हमारे आक़ा
सुन्नी कुइज़ अंबियाये किराम अव्वल
सुन्नी कुइज़ अंबियाये किराम दोम
सुन्नी कुइज़ अंबियाये किराम सोम
सुन्नी कुइज़ अज़वाजे तय्यबात
सुन्नी कुइज़ फ़रज़न्दाने मुकर्रम
सुन्नी कुइज़ खुलफ़ाए राशिदीन
सुन्नी कुइज़ सहाबए केराम व सहाबियात
सुन्नी कुइज़ मालूमाते आम्मा
सुन्नी कुइज़ दास्ताने ज़ुल्म व बरबरिय्यत
सुन्नी कुइज़ मेरे आला हज़रत
सुन्नी कुइज़ नमाज़
सुन्नी कुइज़ कुरआन मजीद
सुन्नी कुइज़ औलियाए किराम
मसलये तकफ़ीर और इमाम अहमद रज़ा
(मुफ़्ती मो. शरीफ़ुल हक़ अमजदी)
आईनये क़यामत (अल्लामा हसन रज़ा ख़ाँ बरेलवी)

**Rs. 10/-**


**GHAZI KITAB GHAR**
Gangwal Bazar, Distt. Bahraech (U.P.)